गर्म हवा में लहराते परचम

प्रफुल्ल कोलख्यान

हवा बहुत गर्म है खेत में, खलिहान में, फुटपाथ पर
फिर भी जो बिकते नहीं उनका विसर्जन भी संभव नहीं होता
किसी संग्राम में इस तरह आदमी के विर्सजन के खिलाफ
वे एक अंतहीन जुलूस में अक्सर पाये जाते हैं आज भी
बेखौफ ... बेखौफ ... बेखौफ होरी के काँधे धरे गमछे की तरह

बाजार में बहुत शोर है, ढोल का, नगाड़ों का और कहीं-कहीं विचारों का
पूजन का, वंदन का, आरती का, साज-सजावट का, प्राणहीन स्पंदन का
शोर की अपनी वेदना है, अपनी कहानी है,
अपनी ही उदासी है, गति बहुत है
इन सबसे पार पाने की बेइंतहा ख्वाहिशें हैं, शोर में
यह शोर काटता भी है, परेशान भी करता है और
बुलाता भी है बड़े प्यार से
जो शोर में शामिल नहीं हैं,
जिनमें शोर शामिल नहीं है
उन्हें भी शोर सालता है

बहुत शोर था बाजार में
अधिक बिकता था शोर जिसके पास जितना भी था
शोर पर चढ़कर आई चीजों में गाजी दमक थी
जैसे शेर पर चढ़कर आई हों
शोर और शेर में मात्रा का अंतर था,
मात्रा अधिक थी शोर में

पूरी जतन से बनाया था बनानेवाले ने लेकिन
कुछ ऐसी भी थी मूर्त्तियाँ, जो बिकी नहीं
किसी भी कीमत पर अंतत:

हालाँकि खरीददार ने
अपनी आँख पर तौला उन्हें भी पूरे मनोयोग से था,

दमकी थीं वे भी खरीददार की आँखों में बार-बार,
मोल-तोल भी किये थे, गिरी-चढ़ी बार-बार कीमतें
कई बार लगा अब बिकीं कि तब बिकीं,
हर बार बीच में ही बात टूट गई
एक ठहाके के साथ खरीददार मुड़ गये
किसी अनचाही दिशा में
और इस तरह नहीं बिक सकीं कुछ मूर्त्तियाँ
अंतत: किसी भी कीमत पर
दोष नहीं था, न बेचनेवाले में, न खरीदनेवाले में,
मूर्त्तियों में तो कतई नहीं
जो बिक नहीं सकी थीं,
वे पूजन की परिधि से बाहर ही थीं
मूर्त्तिकार अपनी अँगुलियों को देखते थे बार-बार,
उनमें लिपटी थी करुणा
मन उदास था शोर नहीं होने के कारण,
शोर के होने के कारण, कुछ भी पता नहीं

पूजा-पांडालों के सामने से गुजरते हुए
अक्सर दिखीं वे मूर्त्तियाँ जो बिक नहीं सकी थीं
गहरे हरे रंग के प्लास्टिक में
अधढँकी-अधखुली आभाहीन,
मेरी तरह उदास, गमगीन
इस तरह से देखे जाने पर या किसी और ही कारण से
पर हिलीं थीं वे मूर्त्तियाँ वामावर्त पर
इसी उदासी में चल पड़ीं कुछ मूर्त्तियाँ
शोर को चीरकर जुलूस में बदलते हुए

आस-पास के लोग
इस बनती हुई जुलूस के अस्तित्व से बेखबर
हाथ में फूल लिये,
मूर्त्तियों की तलाश में चंचल हो रहे थे
उन्हें इस बात का कोई इल्म ही नहीं कि
कब भीड़ जुलूस में बदल जाती है

हवा बहुत गर्म है खेत में, खलिहान में, फुटपाथ पर
फिर भी जो बिकते नहीं उनका विसर्जन भी संभव नहीं होता
किसी संग्राम में इस तरह आदमी के विर्सजन के खिलाफ
वे एक अंतहीन जुलूस में अक्सर पाये जाते हैं आज भी
बेखौफ ... बेखौफ ... बेखौफ होरी के काँधे धरे गमछे की तरह
गर्म हवा में लहराते परचम की तरह ... परचम की तरह